संवेदना के स्वर, संकल्प की दिशा...

प्रो. (CMA) बृजेश कुमार जायसवाल,
प्राचार्य

हमारे लिए यह अत्यंत गर्व और गौरव का क्षण है जब हमारा श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुड़कुड़ा, अपनी स्थापना के 50वें वर्ष को मना रहा है। यह केवल एक संस्था का स्वर्ण जयंती वर्ष नहीं है, बल्कि यह संघर्ष, समर्पण, और सामूहिक सहयोग की एक जीवंत गाथा है। कोविड काल में यह अवसर बीत जाने के बाद, अब सामान्य परिस्थितियों में इसे मनाना हमारे लिए एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार कर रहा है। यह महाविद्यालय उन दुरूह और अस्थिर परिस्थितियों से उभरकर आज जिस स्थिति में है, वह किसी चमत्कार से कम नहीं, बल्कि जनभागीदारी और संस्थागत प्रतिबद्धता का प्रतिफल है।

यह लेख महाविद्यालय की गौरवशाली ऐतिहासिक विरासत को श्रद्धांजलि अर्पित करता है। पूज्य महंथ श्री महंथ रामाश्रय दास जी महाराज के आशीर्वाद से और कर्मयोगी डॉ. इंद्रदेव जी के अथक प्रयासों से यह संस्थान ज्ञान के एक ऐसे केंद्र के रूप में स्थापित हुआ, जिसने पूरे पूर्वांचल को गौरवान्वित किया। उनके बाद डॉ. वीरेंद्र सिंह जी ने भी इस गौरव यात्रा को अपनी कर्मठता से निरंतरता प्रदान की। लेकिन, दुर्भाग्यवश बीते कुछ वर्षों में महाविद्यालय ने अनेक गंभीर प्रबंधकीय चुनौतियों और आंतरिक संरचनात्मक विसंगतियों का सामना किया। प्रबंधकीय विवाद, निरंकुशता, निलंबन और बर्खास्तगी जैसे नकारात्मक खेलों ने इसकी बुनियाद को हिला दिया था। यहाँ तक कि वर्षों तक हमारे शिक्षकों और कर्मचारियों को वेतन नहीं मिल पाता था, जिससे उनका मनोबल पूरी तरह से टूट चुका था। स्वयं मुझे भी इस कठिन दौर में प्रबंधक के कोप का भाजन होना पड़ा, और मुझे निलंबित कर दिया गया था। ऐसे में, मैं कृतज्ञतापूर्वक माननीय कुलपति महोदय का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ, जिन्होंने उस अन्यायपूर्ण निर्णय को रद्द कर महाविद्यालय को एक बार फिर सही दिशा में आगे बढ़ने का अवसर दिया।

मैं अत्यंत विनम्रता और संतोष के साथ यह कहना चाहता हूँ कि आज महाविद्यालय एक बार पुनः अपने ऐतिहासिक गौरव की दिशा में सशक्त कदमों से अग्रसर है। हमने बड़ी दृढ़ता और धैर्य के साथ कानूनी विवादों को शांत किया और महाविद्यालय में अनुशासन स्थापित करने का कठिन कार्य आरंभ किया। वर्षों से रुकी हुई शिक्षकों की पदोन्नति और बकाया वेतन की कार्यवाही को पटरी पर लाया गया, जिससे उनमें एक नई आशा का संचार हुआ। संघर्षों ने हमें झकझोरा, लेकिन उन्होंने हमें तोड़ा नहीं। उन्होंने हमें यह सिखाया कि जब संस्थान की आत्मा जनमानस से जुड़ी होती है, तब कोई भी तूफ़ान उसे जड़ से उखाड़ नहीं सकता। हमने देखा कि कैसे प्रबंधकीय अस्थिरता, आर्थिक संकट और प्रशासनिक चुनौतियाँ हमारे सामने आईं, लेकिन हमने हार नहीं मानी। हमने न केवल समस्याओं का सामना किया, बल्कि उन्हें अवसर में बदलने का साहस भी दिखाया। इन वर्षों में हमने जो प्रयास किये हैं उनसे महाविद्यालय प्रांगण न केवल सुवासित हो रहा है बल्कि अपनी आभा से सुदूर तक प्रभावित भी कर रहा है ।

हरित नवजागरण और तकनीकी प्रगति

पिछले कुछ वर्षों में महाविद्यालय ने न केवल संगठनात्मक स्थिरता प्राप्त की है, बल्कि पर्यावरणीय और तकनीकी उन्नति के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया है।

* सौर ऊर्जा आधारित परिसरः आज पूरा महाविद्यालय सौर ऊर्जा से प्रकाशित होता है। यह न केवल आत्मनिर्भरता का प्रतीक है, बल्कि वैकल्पिक ऊर्जा के प्रयोग में पूर्वांचल के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण भी है।
* हरित परिसरः संस्थान के प्रांगण में हरियाली पुनः स्थापित की गई है। वृक्षारोपण और स्वच्छता अभियान के माध्यम से न केवल परिसर का सौंदर्य लौटा है, बल्कि पर्यावरण-संरक्षण की दिशा में महाविद्यालय एक जीवंत उदाहरण बन चुका है।
* पुस्तकालय स्वचालनः डिजिटल युग की ओर कदम बढ़ाते हुए, महाविद्यालय ने लाइब्रेरी ऑटोमेशन सिस्टम को सफलतापूर्वक लागू किया है। अब छात्र विश्व की किसी भी विश्वविद्यालय की ई-लाइब्रेरी तक ऑनलाइन पहुँच सकते हैं—यह इस पिछड़े अंचल के लिए एक ऐतिहासिक परिवर्तन है।

शैक्षणिक उत्कृष्टताः उपलब्धियों की नई उड़ान

महाविद्यालय के छात्र अब केवल स्थानीय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं।

हाल के वर्षों में छात्रों ने विश्वविद्यालय स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त किए हैं। कई विद्यार्थियों ने NET, JRF और अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता अर्जित की है, जिससे इस संस्थान का नाम प्रतिष्ठा के साथ जुड़ा है। यह उपलब्धियाँ इस तथ्य को सिद्ध करती हैं कि भुड़कुड़ा का

यह शिक्षण केंद्र अब उत्कृष्टता की नई परिभाषा गढ़ रहा है।

स्मृतियाँ जो प्रेरणा बन गईं

इस स्वर्ण जयंती की बेला में कुछ संवेदनाएँ हमें उदास भी करती हैं। महाविद्यालय ने अपने दो अपूर्व मार्गदर्शकों को हाल ही में खो दिया—

* पूर्व प्राचार्य डॉ. वीरेन्द्र सिंह, जिन्होंने इस संस्थान की शैक्षिक गरिमा और अनुशासन की संस्कृति को साकार किया।
* पूर्व प्रबंधक प्रो. यू. पी. सिंह, जिनका 94 वर्ष की आयु में देहावसान संस्थान के लिए उस दीपक के बुझ जाने जैसा है, जिसकी ज्योति ने हमें लंबे समय तक आलोकित किया।

इन दोनों विभूतियों का योगदान इस संस्थान की आत्मा में अंकित है, और उनकी स्मृतियाँ सदैव हमें प्रेरित करती रहेंगी।

स्वर्ण जयंती: स्मृति और संकल्प का संगम

जैसा कि आप सब जानते हैं, महाविद्यालय की स्वर्ण जयंती का वर्ष दुर्भाग्यवश कोविड महामारी के भयावह कालखंड में निकल गया। जब पूरा विश्व और हमारा देश आपदा से जूझ रहा था, तब उत्सव संभव नहीं हो पाया था। लेकिन आज, जब परिस्थितियाँ सामान्य हुई हैं, तो हमने निर्णय लिया है कि स्वर्ण जयंती वर्ष की गरिमा के अनुरूप भव्य आयोजन हो, जिसमें अतीत की उपलब्धियों का सम्मान हो और भविष्य की दिशा का निर्धारण किया जा सके। स्वर्ण जयंती केवल एक पड़ाव नहीं, बल्कि एक प्रस्थान बिंदु है। यह वह क्षण है जब हम अतीत की उपलब्धियों को श्रद्धांजलि देते हुए भविष्य की ओर आशा और आत्मविश्वास के साथ बढ़ते हैं। हमें विश्वास है कि आने वाले वर्षों में यह महाविद्यालय न केवल पूर्वांचल, बल्कि पूरे उत्तर भारत में एक आदर्श शैक्षणिक संस्थान के रूप में स्थापित होगा।

इस आयोजन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि हमने एक बार फिर जन सहयोग की अपील की, और क्षेत्रीय जनमानस ने न केवल हमारी पुकार को सुना, बल्कि दिल खोलकर सहयोग भी प्रदान किया। यह सहयोग हमारे लिए केवल आर्थिक संसाधन नहीं, बल्कि एक गहन भावनात्मक संबल है—एक ऐसा आत्मिक जुड़ाव जो यह दर्शाता है कि यह महाविद्यालय मात्र ईंट-पत्थर से बना एक भवन नहीं, बल्कि समाज की सामूहिक चेतना, आशाओं और आकांक्षाओं का जीवंत प्रतीक है।

विगत तीन महीनों में समाज के विभिन्न वर्गों—व्यवसायियों, शिक्षकों, पूर्व छात्रों, अभिभावकों और आम नागरिकों—ने जिस उत्साह और समर्पण के साथ सहयोग किया, वह अभूतपूर्व है। 10 लाख रुपये से अधिक की धनराशि का संकलन केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि उस विश्वास और अपनत्व का प्रतीक है जो इस संस्थान के प्रति लोगों के मन में है। इस सहयोग से न केवल भौतिक संरचना का कायाकल्प संभव हुआ, बल्कि शैक्षणिक वातावरण में भी नवचेतना का संचार हुआ है।

यह उदाहरण अन्य शैक्षणिक संस्थानों के लिए भी प्रेरणास्रोत बन सकता है—यह दर्शाता है कि जब कोई संस्था अपने मूल्यों, उद्देश्य और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को ईमानदारी से निभाती है, तो समाज भी उसे उसी भाव से उत्तर देता है। यह परस्पर सहयोग की भावना ही किसी संस्था को महान बनाती है।

संस्थापक स्मृति: प्रेरणा की प्रतिमा

इस वर्ष का स्थापना दिवस – 14 सितंबर – केवल एक तिथि नहीं, बल्कि एक युग का स्मरण है। यह वह दिन होगा जब श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भुड़कुड़ा, अपने संस्थापक अध्यक्ष पूज्य महंथ श्री महंथ रामाश्रय दास जी महाराज की प्रेरणा को मूर्त रूप देने जा रहा है। उनके आदर्शों, तप, त्याग और दूरदृष्टि को श्रद्धांजलि स्वरूप एक पावन प्रतिमा का अनावरण प्रस्तावित है। यह प्रतिमा केवल एक शिल्प नहीं, बल्कि एक जीवंत प्रतीक होगी—एक ऐसा प्रतीक जो आने वाली पीढ़ियों को सेवा, संकल्प और संस्कार की उस परंपरा से जोड़ती रहेगी, जिसकी नींव स्वयं महंथ जी ने अपने जीवन से रखी थी।

यह प्रतिमा उस आत्मा की प्रतिध्वनि होगी जिसने शिक्षा को केवल ज्ञान का माध्यम नहीं, बल्कि समाज निर्माण का औजार माना। यह उस दृष्टि का स्मरण कराएगी जिसने ग्रामीण अंचल में उच्च शिक्षा की लौ जलाने का साहस किया, और उसे जनभागीदारी से साकार किया। जब छात्र इस प्रतिमा के समक्ष नतमस्तक होंगे, तो वे केवल श्रद्धा नहीं व्यक्त करेंगे, बल्कि अपने भीतर उस प्रेरणा को जागृत करेंगे जो उन्हें जीवन में कुछ बड़ा, कुछ सार्थक करने की ओर अग्रसर करेगी।

हमें अत्यंत हर्ष है कि इस ऐतिहासिक कार्य के साक्षी बनने का सौभाग्य माननीय मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज के कर कमलों से प्राप्त हो सकता है। उनका आगमन न केवल इस आयोजन की गरिमा को बढ़ाएगा, बल्कि यह दर्शाएगा कि शिक्षा, संस्कृति और परंपरा के संगम स्थल को शासन स्तर पर भी वह मान्यता प्राप्त है जिसकी वह अधिकारी है।

इस अवसर पर हमारी वार्षिक पत्रिका 'अपराजिता' का स्वर्ण जयंती विशेषांक भी विमोचित होगा। 'अपराजिता' केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे संस्थान की वैचारिक और रचनात्मक चेतना का दर्पण है। इसमें हमारे छात्रों की कल्पनाओं की उड़ान, संकाय सदस्यों की चिंतनशील लेखनी, और संस्थान की गतिविधियों की जीवंत झलक समाहित होती है। इस विशेषांक में अतीत की स्मृतियाँ, वर्तमान की उपलब्धियाँ और भविष्य की संभावनाएँ एक साथ समाहित होंगी—जैसे एक दीपक की लौ में अंधकार को चीरने की शक्ति और दिशा दोनों होती है।

भविष्य की योजनाः संकल्प से सिद्धि की ओर

अब जब हम पुनः स्थिरता की ओर बढ़ रहे हैं, तो यह समय है कि हम केवल भूतकाल की स्मृतियों में न रहें, बल्कि भविष्य की योजनाओं को मूर्त रूप दें। हमें एक ऐसा संस्थान बनाना है जो न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता का केंद्र हो, बल्कि सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक समरसता और नैतिक मूल्यों का भी संवाहक हो। हमारा उद्देश्य है कि यह संस्थान पूर्वांचल का एक अद्वितीय केंद्र बने। इसके लिए हम शीघ्र ही NAAC मूल्यांकन हेतु आवेदन करने की दिशा में सक्रिय हैं। हमारा उद्देश्य केवल मूल्यांकन पाना नहीं, बल्कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संस्कृति को संस्थागत बनाना है। इसके साथ ही, वर्तमान की मांग के अनुसार, हम नवीन रोज़गारपरक पाठ्यक्रमों की शुरुआत करने जा रहे हैं, ताकि हमारे छात्र बदलते वैश्विक परिवेश में आत्मनिर्भर बन सकें।

इस नई शुरुआत के लिए हमें कुछ मूलभूत संकल्पों को आत्मसात करना होगाः

* गुणवत्ता की संस्कृतिः शिक्षा केवल डिग्री नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण का माध्यम है। हमें शिक्षण की गुणवत्ता को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी होगी।
* सामाजिक समावेशिताः महाविद्यालय को समाज के हर वर्ग के लिए सुलभ और समावेशी बनाना होगा, ताकि कोई भी प्रतिभा संसाधनों के अभाव में पीछे न रह जाए।
* नवाचार और शोधः हमें एक ऐसा वातावरण बनाना होगा जहाँ छात्र और शिक्षक दोनों नवाचार को प्रोत्साहित करें और शोध को अपनी पहचान बनाएं।
* सांस्कृतिक पुनर्स्थापनः हमें अपनी सांस्कृतिक विरासत को आधुनिकता के साथ जोड़ते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाना होगा।

इस पूरी यात्रा में, मैं महाविद्यालय परिवार के प्रत्येक सदस्य—मेरे शिक्षक साथी, गैर-शिक्षण कर्मचारी, छात्र और उनके अभिभावक—के सहयोग के लिए हृदय से आभारी हूँ। यह सच है कि इस यात्रा में कुछ शिक्षकों के साथ सख्ती से भी पेश आना पड़ा है, पर उनके प्रति मेरे मन में कोई दुर्भावना नहीं है। मैं मानता हूँ कि हम सब एक ही परिवार का हिस्सा हैं और हमारा उद्देश्य एक ही है—इस संस्था को नई ऊँचाइयों तक ले जाना। इस यात्रा में सबसे महत्वपूर्ण तत्व है—हमारी एकता। जब शिक्षक, छात्र, कर्मचारी, अभिभावक और समाज एक साथ खड़े होते हैं, तब कोई भी लक्ष्य असंभव नहीं रहता। हमें यह समझना होगा कि यह संस्थान किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि हम सबका है। इसकी सफलता हमारी सामूहिक चेतना, सहयोग और समर्पण पर निर्भर करती है।

मैं माननीय कुलपति महोदय, कुलसचिव महोदय, परीक्षा नियंत्रक महोदय और विश्वविद्यालय के अन्य पदाधिकारियों का भी आभार प्रकट करता हूँ, जिन्होंने हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन किया और सहयोग दिया। अंत में, मैं उन सभी मित्रों, शुभचिंतकों और समाज के सदस्यों का विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, जिनका महाविद्यालय से सीधा संबंध नहीं है, लेकिन फिर भी मेरे एक आह्वान पर उन्होंने खुलकर सहयोग किया। उनका यह योगदान सिर्फ आर्थिक नहीं, बल्कि मेरे प्रति उनके विश्वास और संस्था के प्रति उनके प्रेम का प्रतीक है।

'अपराजिता' स्वर्ण जयंती विशेषांक के अवसर पर मैं हृदय से उन सभी महानुभावों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने स्नेह, आशीर्वाद और शुभकामनाओं से इस ऐतिहासिक क्षण को गरिमा प्रदान की। हमें यह गौरव प्राप्त हुआ है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी, उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, जिन्होंने अपने कर-कमलों से इस विशेषांक का विमोचन किया, तथा उत्तर प्रदेश की राज्यपाल महामहिम आनंदी बेन पटेल जी. जम्मू कश्मीर के लेफ्टिनेंट गवर्नर मनोज सिन्हा जी, असम के राज्यपाल महामहिम लक्ष्मण आचार्य जी, माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री योगेन्द्र उपाध्याय जी सहित विविध विश्वविद्यालयों के कुलपति, कुलसचिव और असंख्य विद्वतजनों एवं नागरिक बंधुओं ने अपने प्रेरणादायी संदेशों के माध्यम से हमें सम्मानित किया।

मैं 'अपराजिता' के संपादक मंडल, सहयोगी संपादकों, संकाय सदस्यों और सभी योगदानकर्ताओं के प्रति भी अपनी गहरी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ, जिनके अथक परिश्रम, रचनात्मकता और समर्पण से यह विशेषांक संभव हो सका। साथ ही, उन सभी शुभचिंतकों, पूर्व छात्रों और समाज के संवेदनशील सदस्यों को भी नमन, जिनके सहयोग, विश्वास और सहभागिता ने इस संस्थान की स्वर्ण यात्रा को वास्तव में उज्जवल बना दिया।

संस्थाओं की यात्रा केवल ईंट-पत्थरों की दीवारों से नहीं बनती, बल्कि वह बनती है उन सपनों से, जो समाज के हर वर्ग ने मिलकर देखे होते हैं। श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय की यह 50 वर्षों की यात्रा एक ऐसी ही स्वर्णिम गाथा है—जहाँ संघर्षों की तपिश ने संकल्पों को और दृढ़ किया, और जहाँ हर बाधा ने हमें आत्ममंथन का अवसर दिया। आज जब हम इस स्वर्ण जयंती वर्ष के द्वार पर खड़े हैं, तो यह केवल अतीत का उत्सव नहीं, बल्कि भविष्य की नींव रखने का क्षण है। यह वह समय है जब हमें अपने अनुभवों से सीखकर एक नई दिशा में कदम बढ़ाना है। यह वह अवसर है जब हम केवल संस्थागत पुनर्निर्माण की बात नहीं करें, बल्कि एक वैचारिक पुनर्जागरण की ओर अग्रसर हों।

मुझे विश्वास है कि हम सब मिलकर इस संस्थान को फिर से गौरव के शिखर पर स्थापित करने में सफल होंगे।

दिनांक : 07.10.2025

प्रो. (CMA) बृजेश कुमार जायसवाल